Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य अध्याय 07 - यशोधरा मैथिलीशरण गुप्त

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. यह गौरव की बात कि स्वामी गये|

(क) वैराग्य हेतु
(ख) सिद्धि हेतु
(ग) राज्य प्राप्ति हेतु
(घ) तीर्थ यात्रा हेतु।
उत्तर: (ख) सिद्धि हेतु

प्रश्न 2. यशोधरा को पीड़ा है कि उसके पति चले गए हैं –

(क) सोता हुआ छोड़कर
(ख) लक्ष्य बताए बिना
(ग) चोरी-चोरी
(घ) खाना खाए बिना।
उत्तर: (ग) चोरी-चोरी

प्रश्न 3. कवि के अनुसार प्रकृति का पुण्य तीर्थस्थल है –

(क) भारतवर्ष
(ख) हिमालय
(ग) गंगा
(घ) सागर।
उत्तर: (क) भारतवर्ष

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'यशोधरा' का काव्यरूप क्या है ?

उत्तर: 'यशोधरा' का काव्यरूप खण्डकाव्य है।

प्रश्न 2. यशोधरा दुःखी क्यों है ?

उत्तर: यशोधरा अपने पति सिद्धार्थ के चोरी-चोरी चले जाने के कारण दु:खी है।

प्रश्न 3. भारतवर्ष अन्य देशों का सिरमौर क्यों है?

उत्तर: भारतवर्ष संसार का सबसे प्राचीन देश होने के कारण अन्य देशों का सिरमौर है।

प्रश्न 4. भारतवर्ष को प्रकृति का पुण्य तीर्थस्थल क्यों कहा जाता है ?

उत्तर: भारतवर्ष में प्रकृति का अपार वैभव बिखरा पड़ा है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. यशोधरा की मूल संवेदना अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: 'यशोधरा' कविता में गौतम बुद्ध के राजगृह को त्यागकर चले जाने के पश्चात् उनकी पत्नी यशोधरा के हृदय में उत्पन्न भावों का मार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण है। यशोधरा अपने पति के प्रति समर्पित है। जो उसके पति को मान्य है, वही यशोधरा को भी स्वीकार है। सिद्धि हेतु उनके जाने में भी वह गौरव अनुभव करती है। किन्तु उनके चुपचाप चोरी-चोरी, उससे कुछ कहे बिना चले जाना उसको बहुत पीड़ा पहुँचाता है। इसमें उसको अपनी उपेक्षा का भाव

प्रतीत होता है यह उपेक्षा उसके विरह दुःख को दूना कर देती है।इस संकलन में यशोधरा की सहज नारीगत वेदना , क्षोभ, संताप के साथ-साथ उसके मातृत्व और वात्सल्य का भी प्रभावशाली अंकन है। यही इस कविता की मूल संवेदना है।

प्रश्न 2. "दुःखी न हों इस जन के दुःख से पंक्ति में यशोधरा ने 'जन' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है?

उत्तर: "दुखी न हों इस जन के दुःख से " पंक्ति में 'जन' शब्द का प्रयोग यशोधरा ने स्वयं अपने लिए किया है। यद्यपि उसे इस बात की पीड़ा है कि उसके पति ने उसकी उपेक्षा की है , वह उसको बिना बताए घर से चले गए हैं। इसलिए यशोधरा आत्मग्लानि में भरकर स्वयं को सिद्धार्थ की पत्नी या अर्धांगिनी ना कह कर एक साधारण मनुष्य अर्थात 'जन' कहती है।

प्रश्न 3. "उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से "-यशोधरा ने यह क्यों कहा है?

उत्तर: मनुष्य जिस से प्रेम भाव रखता है उसी को उपालम्भ दे सकता है। सिद्धार्थ अपनी पत्नी यशोधरा से बिना कुछ कहे सुने चोरी-चोरी घर त्याग कर चले गए हैं और इससे यशोधरा बहुत आहत भी है, थे सिद्धार्थ प्रेम पूर्वक यशोधरा से गृह त्याग के लिए अनुमति मांगते तो ही यशोधरा को अपने पति के इस महान कार्य पर अभिमान होता परंतु सिद्धार्थ ने यशोधरा की पूर्णतया अपेक्षा करती और उनके प्रेम को अनदेखा कर दिया। यदि सिद्धार्थ दांपत्य प्रेम का निर्वाह करते तो ही यशोधरा उन्हें उलाहना देना उचित समझती है। पति के उपेक्षा पूर्ण व्यवहार को देखकर हृदय में उठने वाली पीड़ा के कारण यशोधरा ने ऐसा कहा है।

प्रश्न 4. कवि ने भारतवर्ष को भू-लोक का गौरव क्यों बताया है ? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: प्राकृतिक वैभव से समृद्ध भारत भूमि ऋषिया-महर्षियों की भूमि रही है। इस भूमि पर अनेक वीर , ऋषि-मुनि. दानी और चिंतकों ने जन्म लिया है। भारत भूमि संसार के सम्पूर्ण देशों में सिरमौर है यह वह पुण्य भूमि है ; जिसके निवासी समस्त विद्याओं एवं कला-कौशल के प्रथम आचार्य रहे हैं। कवि ने इस कारण भारत को पृथ्वी का गौरव बताया है।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. "यशोधरा" के पठित काव्यांश के आधार पर यशोधरा की चारित्रिक विशेषताएँ प्रकट कीजिए।

उत्तर: 'यशोधरा' के पठित काव्यांश में यशोधरा के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ व्यञ्जित हुई हैं-

1. विरहिणी नायिका- इस काव्यांश की नायिका यशोधरा है। यशोधरा के पति सिद्धार्थ उसे रात में सोते हुए छोड़कर तपस्या के लिए चले गए। वह उनके विरह में व्याकुल है यशोधरा के विरह का सुंदर चित्रण इस काव्यांश में हुआ है।

2. उपेक्षिता नायिका- यशोधरा के प्रति सिद्धार्थ जब गृह त्याग किया तो इस संबंध में यशोधरा से बिल्कुल भी विचार-विमर्श नहीं किया और उसे बिना बताए ही आधी रात में घर से निकल गए। इस तरह उन्होंने यशोधरा और उनके प्रेम की पूर्णतया उपेक्षा की है।

3. समर्पित पत्नी- यशोधरा पूर्णतया अपने पति को समर्पित पत्नी के रूप में चित्रित हुई है। यशोधरा स्वयं कहती है कि-

'मैंने मुख्य उसी को जाना
जो भी मन में लाते
सखि, वे मुझसे कहकर जाते'

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

जो बात उनके पति को स्वीकार होती उसी को उन्होंने स्वीकार किया है वह सिद्धार्थ की बात को हमेशा मान देती थी।

4. वीर क्षत्राणी- यशोदा वीर क्षत्राणी है। वह क्षत्राणी के धर्म का पालन के लिए सदा तैयार रहती है। यशोधरा कहती है कि जब भी समय आया है तब हम क्षत्राणियों ने स्वयं ही अपने पतियों को अपने हाथों से तैयार करके रणभूमि में भेज देती हैं।

प्रश्न 2. मैथिलीशरण गुप्त जी को भारतीय सांस्कृतिक नव जागरण काल का राष्ट्रकवि क्यों कहा जाता है?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि इसलिए माना जाता है। क्योंकि गुप्त जी की रचनाओं में राष्ट्रीयता, स्वदेश प्रेम, युगीन चेतना और भारतीय संस्कृति की छाप पूरी तरह दिखाई देती है 'भारत-भारती' नामक रचना से इन्हें अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई। गुप्त जी की रचनाओं में मानव जीवन और समाज के विविध अंगों की समस्याओं का चित्रण हुआ है। उनमें भारतीय संस्कृति की प्राचीनता के प्रति पूज्य भाव है तो नए परिवर्तन के प्रति भी तीव्र उत्साह है। द्विवेदी युगीन आदर्शवादी नैतिकता , पवित्रता, पौराणिक आख्यानों की तर्क संगत व्याख्या एवं समसामयिक राष्ट्रीय हलचलों की तीव्र गूँज उनके काव्य में है वे सामाजिक उत्पीड़न, राजनीतिक दासता तथा धार्मिक संकीर्णता के विरोधी हैं। उन्हें भारतीय सांस्कृतिक नव जागरण का कवि कहा जाता है। देश एवं मातृभूमि के प्रति गर्व तथा गौरव , राष्ट्रीय जागरण से ओत-प्रोत भारत भारती की कविताओं ने इन्हें राष्ट्रकवि के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

प्रश्न 3. भारत की श्रेष्ठता ' में अभिव्यक्त भावों को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: 'भारत की श्रेष्ठता' शीर्षक काव्यांश मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध रचना 'भारत-भारती' से उद्धृत है। इस काव्यांश मैं कभी नहीं भारत की श्रेष्ठता के विषय में निम्नलिखित भाव व्यक्त किए हैं-

1. अतीत का गौरव गान- इस काव्यांश में भारतवर्ष के अतीत के गौरव का भव्य चित्र अंकित हुआ है। भारत इस पृथ्वी लोक का गौरव है। यह प्रकृति का मनोरम क्रीड़ास्थल है। यहाँ पर्वतराज हिमालय तथा पावन गंगा नदी है। यह ऋषि-मुनियों की तपोभूमि है।

2. विश्व का सिरमौर- भारत संसार के सभी देशों में सर्वश्रेष्ठ है। प्राचीन देश भारत संसार के देशों का सिरमौर है। इस संसार में इतना अधिक पुरातन देश कोई दूसरा नहीं है। पृथ्वी पर ईश्वर की जो देन है उन सबका भण्डार भारत में ही हुआ है। भारत भूमि पर ही ब्रह्मा जी ने सृष्टि का आरम्भ किया है।

3. ज्ञान का भंडार- इस पावन भूमि के निवासी आर्य कहलाते हैं। आर्य ज्ञान-विज्ञान और कला-कौशल के ज्ञाता तथा विद्वान हैं। समस्त संसार को उन्होंने ही ज्ञान की दीक्षा दी है। हम भारतीय उनकी ही संतान हैं।

प्रश्न 4. भारतवर्ष के अतीत की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: भारत की श्रेष्ठ का नमक काव्यांश में गुप्त जी ने भारत की अनेकानेक विशेषताओं का वर्णन किया है उनमें से प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

1. संसार का प्राचीनतम देश- भारत इस संसार का प्राचीनतम देश है। संसार में सर्वप्रथम इसी देश में सृष्टि आरम्भ हुई थी। इस देश के निवासी आर्य कहलाते थे। आर्य श्रेष्ठ पुरुष थे। वे ज्ञान-विज्ञान के ज्ञाता तथा कला-कौशल के विद्वान थे। भारत के लोगों ने ही समस्त संसार को ज्ञान सिखाया था।

2. सभ्यता और संस्कृति का केंद्र- भारत ने दूसरे देशों में सभ्यता और संस्कृति की शिक्षा दी थी।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

प्राचीन भारत सुसंस्कृत और सभ्य तो था ही वह सम्पन्न भी था। यही कारण है कि भारत को विश्व गुरु कहा जाता है।

3. अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य- भारत भूमि की प्राकृतिक सुषमा अद्‌वितीय थी। यह भूमि शस्य-श्यामला थी। यहाँ विविध ऋतुएँ समय पर आती और जाती थीं। तरह-तरह की वनस्पतियाँ इस देश में उत्पन्न होती थीं। ईश्वर ने अपनी समस्त विभूतियाँ सर्वप्रथम इसी देश को प्रदान की थीं।

4. उच्च मानवीय आदर्श- यहाँ धन-धान्य का भण्डार था। लोग सुखी और समृद्‌ध थे। प्राचीन भारत के निवासी सुसंस्कृत, सभ्य तथा शिक्षित थे, वे परोपकारी, दानी, स्नेही तथा सेवाभावी थे। यह देश उच्च मानवीय आदर्शों का केंद्र था। इस प्रकार भारत का अतीत अत्यन्त गौरवपूर्ण था।

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य - अध्याय 06 – यशोधरा - मैथिलीशरण गुप्त

कवि परिचय

राष्ट्रकवि की उपाधि से सम्मानित भारतीय संस्कृति के महान् उद्‌गाता श्री मैथिलीशरण गुप्त का जन्म उत्तर प्रदेश के चिरगाँव (जिला झाँसी) में सन् 1886 में हुआ गुप्त जी द्‌विवेदी युग के सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतिनिधि कवि हैं।

गुप्त जी की रचनाओं में राष्ट्रीयता , स्वदेश प्रेम, युगीन चेतना और भारतीय संस्कृति की छाप पूरी तरह दिखाई देती है। भारत-भारती नामक रचना से इन्हें अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई। देश एवं मातृभूमि के प्रति गर्व तथा गौरव, राष्ट्रीय जागरण से ओत-प्रोत 'भारत भारती' की कविताओं ने इन्हें राष्ट्रकवि के रूप में प्रतिष्ठित किया भारत सरकार ने इन्हें राज्य सभा का सदस्य भी मनोनीत किया।

गुप्त जी की रचनाओं में मानव जीवन और समाज के विविध अंगों की समस्याओं का चित्रण हुआ है। उनमें भारतीय संस्कृति की प्राचीनता के प्रति पूज्य भाव है तो नए परिवर्तन के प्रति भी तीव्र उत्साह है। द्‌विवेदी युगीन आदर्शवादी नैतिकता, पवित्रता, पौराणिक आख्यानों की तर्क संगत व्याख्या एवं समसामयिक राष्ट्रीय हलचलों की तीव्र गूँज उनके काव्य में है वे सामाजिक उत्पीड़न , राजनीतिक दासता तथा धार्मिक संकीर्णता के विरोधी हैं। उन्हें भारतीय सांस्कृतिक नव जागरण का कवि कहा जाता है।

गुप्त जी ने खण्डकाव्य, प्रबन्धकाव्य, नाटक एवं अनूदित काव्य आदि विधाओं में लिखा है। इनकी रचनाओं में भारतभारती ', 'जयद्रथवध', 'पंचवटी', 'गुरुकुल,'झंकार, 'साकेत, 'यशोधरा', 'द्वापर, 'जयभारत, सिद्धराज', 'विष्णु प्रिया आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। 'साकेत' महाकाव्य ने गुप्त जी को कीर्ति के शिखर पर पहुँचाया , जिसमें राम के पावन चरित्र को आधुनिक परिवेश में चित्रित करते हुए उपेक्षिता उर्मिला के चरित्र को त्यागमयी नारी के रूप में चित्रित किया गया है ।

पाठ-परिचय

प्रस्तुत संकलन गुप्त जी के प्रसिद्ध काव्य यशोधरा से संकलित किया गया है यशोधरा में गौतम बुद्ध के राजगृह को त्यागकर चले जाने के पश्चात् उनकी पत्नी यशोधरा के हृदय में उत्पन्न भावों का मार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण है। गौतम बुद्ध अपनी पत्नी यशोधरा एवं पुत्र राहुल को सोता हुआ छोड़कर चले जाते हैं। प्रातः काल होने पर यशोधरा को जब पता लगता है, तो वह आत्मग्लानि से भरकर वेदना प्रकट करती है। उसे इस बात का अधिक दुःख है कि उसके पति उसे बिना बताए चले गए वह कहती है कि ऐसा करके उन्होंने सम्भवतः हम क्षत्राणी नारियों को समझने में भूल कर दी है। हम क्षत्राणी नारियां देश की रक्षा के लिए अपने पतियों को खुशी-खुशी रण क्षेत्र में भेज देती हैं फिर वे तो जगत कल्याण हेतु सिद्धि प्राप्त करने के लिए गए हैं इस संकलन में यशोधरा की सहज नारीगत वेदना, क्षोभ, संताप के साथ-साथ उसके मातृत्व और वात्सल्य का भी प्रभावशाली अंकन है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्याएँ- यशोधरा

1. सिद्धि-हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात,
पर चोरी-चोरी गये, यही बड़ा व्याघात।।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ-बाधा ही पाते
मुझको बहुत उन्होंने माना, फिर भी क्या पूरा पहचाना?
मैंने मुख्य उसी को जाना, जो वे मन में लाते। सखि,
वे मुझसे कहकर जाते।

शब्दार्थ – सिद्ध-हेतु = सफलता पाने के लिए। व्याघात = चोट, पीड़ा।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक सरयू में संकलित 'यशोधरा' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। सिद्धार्थ अपनी पत्नी यशोधरा तथा पुत्र राहुल को रात में सोता छोड़कर चुपचाप तपस्या करने के लिए घर से चले गए है। उनका इस प्रकार जाना यशोधरा को बहुत पीड़ा देता है। वह अपने कष्ट की बात अपनी सखी को बता रही है।

व्याख्या– सिद्धार्थ यशोधरा को सोते हुए छोड़ कर गृह त्याग कर देते हैं। इसी संदर्भ में यशोधरा कहती है- हे सखि, मेरे स्वामी (पति) सिद्धि प्राप्त करने के लिए गए हैं। यह बात मुझे गौरव प्रदान करने वाली है , किन्तु वह मुझको बिना बताये चुपचाप चले गए, यह बात मुझे अत्यन्त चोट पहुँचा रही है। हे सखि, यदि वे मुझसे बताकर जाते तो मुझे इतना कष्ट न होता । यदि वे मुझको बता देते तो क्या मै उनको सिद्धि के लिए जाने से रोकती ? मैं जानती हूँ कि उन्होंने मुझको बहुत माना है , किन्तु तब भी वह मुझे पूरी तरह पहचान नहीं पाए। मैंने कभी उनकी उपेक्षा नहीं की। जो बात उनको ठीक लगती थी , मैंने सदैव उसको ही स्वीकार किया है। परन्तु वह मुझको बिना बताए ही चले गए। यदि वे मुझसे कहकर जाते तो मुझे इतनी पीड़ा न होती।

विशेष –

1. यशोधरा की व्यथा का मार्मिक चित्रण हुआ है।
2. यशोधरा सिद्धार्थ को बहुत प्रेम करती है, उनका चुपचाप जाना यशोधरा पीड़ा पहुँचा रहा है।
3. अनुप्रास तथा पुनरुक्ति अलंकार हैं। गीतिकाव्य शैली है।
4. भाषा सरल, सरस खड़ी बोली है।

2. स्वयं सुसज्जित करके क्षण में, प्रियतम को, प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण मेंक्षात्र धर्म के नाते।। सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
हुआ न वह भी भाग्य अभागा, किस पर विफल गर्व अब जागा?
जिसने अपनाया था, त्यागा। रहे स्मरण ही आते! सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

शब्दार्थ – प्राणों का पण = जीवन का बाजार अर्थात् युद्ध भूमि। रण = युद्ध। क्षात्र-धर्म = क्षत्रिय का कर्तव्य।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक सरयू में संकलित 'यशोधरा' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। यशोधरा को पीड़ा इस बात की है कि उसके पति सिद्धार्थ ने उसको गृह-त्याग के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं बताया । यदि वह उसको बताकर जाते तो वह उनको जाने के लिए स्वयं ही सहर्ष कह देती।

व्याख्या – यशोधरा कहती है कि हम क्षत्राणियाँ स्वदेश की रक्षा के लिए युद्ध का आह्वान होने पर अपने प्रिय पतियों को अस्त्र-शस्त्र से सजाकर युद्ध भूमि के लिए विदा करती हैं। उसमें थोड़ा भी विलम्ब नहीं होता। युद्ध भूमि में प्राणों का बाजार सजा होता है। किन्तु हम क्षत्रिय नारियाँ अपने क्षत्रिय धर्म का पालन में देर नहीं करती हैं। हे सखी काश ! वह मुझसे कहकर जाते। मुझे उन्होंने यह सौभाग्य भी प्रदान नहीं किया। मुझे तो अपने क्षत्राणी-धर्म के पालन करने पर गर्व करने का अवसर भी प्राप्त नहीं हुआ। कभी जिसने मुझे अपनी अर्धांगिनी के रूप में अपनाया था, अब उसने ही मुझको त्याग दिया है। अब तो मेरी यही कामना है कि वह मुझको याद आते रहें। हे सखि, यदि वे मुझसे बताकर जाते तो मुझे इतना दुःख न होता।

विशेष –

1. कवि ने यशोधरा की व्यथा का सजीव एवं मार्मिक चित्रण किया है।
2. वियोग शृंगार रस का सुंदर चित्रण है। अनुप्रास तथा रूपक अलंकार है।
3. गीति शैली है।
4. भाषा संरल, सरस तथा विषयानुकूल है।

3. नयन उन्हें हैं निष्ठुर कहते,
पर इनसे जो आँसू बहते,
सदय हृदय वे कैसे सहते?
गये तरस ही खाते। सखि,
वे मुझसे कहकर जाते।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

शब्दार्थ – निष्ठुर = दयाहीन, निर्दय। सदय = दयालु।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक सरयू में संकलित 'यशोधरा' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। यशोधरा के पति सिद्धार्थ गृह त्याग कर चले गए हैं। इससे दुःखी यशोधरा अपनी सखी से अपने संताप की चर्चा कर रही है। अपने पति को उसको बिना बताए चुपचाप चले जाना आहत कर रहा है।

व्याख्या – पति के वियोग में दुखी यशोधरा कहती है कि हे सखि , मेरे नेत्र कहते हैं कि मेरे पति निर्दय हैं तभी तो वह बिना बताए चुपचाप चले गए हैं। किन्तु यह बात सच नहीं है वह अत्यन्त दयालु हैं। यदि वह मुझे बताकर घर से जाते तो मेरी आँखों से दु:ख के कारण आँसू बहने लगते। उन आँसुओं को दयालु हृदय वाले मेरे वह प्रियतम सहन नहीं कर पाते। मुझ पर तरस खाकर ही उन्होंने मझे कुछ नहीं बताया और वह चुपचाप चले गए। काश ! वह मुझ से कहकर वन के लिए प्रस्थान करते।

विशेष –

1. यशोधरा को प्रतीत होता है कि चुपचाप जाकर भी सिद्धार्थ ने उस पर दया ही प्रदर्शित की है।
2. गीति छन्द है।
3. विप्रलंभ श्रृंगार रस है।
4. सरल, सरस तथा प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

4. जाएँ, सिद्धि पावें वे सुख से,
दुःखी न हों इस जन के दुःख से
उपालम्भ हूँ मैं किस मुख से?
आज अधिक वे भाते! सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
गये, लौट भी वे आवेंगे, कुछ अपूर्व-अनुपम लावेंगे ?
रोते प्राण उन्हें पावेंगे?
पर क्या गाते-गाते, सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

शब्दार्थ– सिद्धि = सफलता। इस जन = यशोधरा। उपालम्भ = उलाहना। भाते = अच्छे लगते हैं।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक सरयू में संकलित 'यशोधरा' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। यशोधरा अपने पति सिद्धार्थ के घर छोड़ जाने के कारण बहुत दु:खी है। वह अपनी सखी से अपने मन के दु:ख के बारे में बातें कर रही है। उसको आशा है कि भविष्य में कभी उसके पति उसको अवश्य दर्शन देंगे।

व्याख्या– पति वियोग में व्याकुल यशोधरा कहती है कि हे सखि , मेरे पति सिद्धि प्राप्त करने के लिए चले जाएँ , मैं उनको नहीं रोकुंगी। वह सुख पायें और अपने लक्ष्य को पाने में सफल हों वह मेरे बारे में सोचकर अपने मन में दुःखी नहीं हों। मैं उनसे कोई उलाहना नहीं दे रही। मुझे तो आज वह पहले से भी अधिक प्रिय लगते हैं, अच्छा होता वह मुझसे कहकर जाते। वह चले तो गए हैं , किन्तु मुझे विश्वास है कि वह पुनः आयेंगे। जब वह आयेंगे तो अपने साथ अपनी अनोखी उपलब्धि, अर्थात अपनी सिद्धियाँ भी लायेंगे। आज मैं उनके विरह में आँसू बहा रही हैं किन्तु उनसे मिलकर मेरा कष्ट मिट जायेगा और मैं गा-गाकर उनका स्वागत-सत्कार करूंगी। हे सखि, यदि वह मुझसे कहकर जाते तो कितना अच्छा होता ।

विशेष –

1. यशोधरा के विरह का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है।
2. वियोग श्रृंगार रस है।
3. पुनरुक्ति तथा अनुप्रास अलंकार हैं।
4. गीतिकाव्य शैली है।
5. भाषा सरल, सरस तथा विषयानुरूप, भावानुकूल है।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

सन्दर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्याएँ-भारत की श्रेष्ठता

1. भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ ।।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन, भारतवर्ष है।।

शब्दार्थ– भू-लोक = धरती । पुण्य = पवित्र। लीलास्थल = क्रीड़ाभूमि। गिरि = पर्वत। उत्कर्ष = उत्थान।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक सरयू में संकलित 'भारत की श्रेष्ठता' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। गुप्त जी ने भारत के गौरवशाली अतीत का वर्णन करते हुए उसे संसार का सर्वश्रेष्ठ देश बताया है। भारत का प्राकृतिक सौन्दर्य अनुपम है।

व्याख्या– कवि पूछता है कि इस पृथ्वी का गौरव कौन-सा देश है ? प्रकृति की पवित्र क्रीड़ा भूमि कौन-सी है। जहाँ सुन्दर पर्वत हिमालय तथा गंगा प्रवाहित होती है ? वह कौन-सा देश है। जो संसार के सभी देशों में सर्वाधिक उन्नत है ? ऋषि-मुनियों का पावन स्थल कौन-सा है ? कवि स्वयं उत्तर देता है कि उस देश को भारतवर्ष कहते हैं।

विशेष –

1. इन पंक्तियों में भारत की महिमा का गुणगान है।।
2. कवि का उद्देश्य भारतवासियों के मन में स्वदेश के प्रति प्रेम और सम्मान पैदा करना है।
3. अनुप्रास अलंकार है।
4. भाषा प्रवाहपूर्ण साहित्यिक खड़ी बोली है।

2. हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है।
विधि ने किया नर-सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

शब्दार्थ– वृद्ध = बूढ़ा, प्राचीन । सिरमौर = सर्वश्रेष्ठ , सर्वोच्च । पुरातन = पुराना। और = अन्य, दूसरा। भव-भूति = सांसारिक वैभव । भण्डार = संग्रह। विधि = ब्रह्मा। नर-सृष्टि = जीवों का जन्म।।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक सरयू में संकलित 'भारत की श्रेष्ठता' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। यह 'भारत-भारती' का एक अंश है। कवि ने भारत के अतीत-गौरव का वर्णन किया है। भारत विश्व का सर्वश्रेष्ठ देश है। वह ऋषियों की भूमि है।

व्याख्या– कवि कहता है कि भारत विश्व का सर्वाधिक प्राचीन देश है। यह समस्त देशों में सर्वश्रेष्ठ है। भारत के समान प्राचीन देश संसार में कोई नहीं है। ईश्वर का जितना सांसारिक वैभव है, उस सबका संग्रहालय भारत ही है अर्थात् भारत में सृष्टि की सर्वोत्तम चीजें पायी जाती है। ब्रह्मा ने जीव-जन्तुओं की उत्पत्ति को कार्य सर्वप्रथम भारतवर्ष में किया था। तात्पर्य यह है कि सृष्टि का आरम्भ भारत भूमि से ही किया था।

विशेष–

1. भारतीय अतीत का गौरव गान है।
2. प्रस्तुत पंक्तियाँ राष्ट्र-भावना से ओत-प्रोत हैं।
3. भाष सरल, विषयानुकूल तथा प्रवाहपूर्ण है।
4. अनुप्रास अलंकार है।

3. यह पुण्यभूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी 'आर्य' हैं,
विद्या, कला-कौशल सभी के जो प्रथम आचार्य हैं।
सन्तान उनकी आज यद्यपि हम अधोगति में पड़े।
पर चिह्न उनकी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े।।

शब्दार्थ– पुण्यभूमि = पवित्र स्थान। आर्य = श्रेष्ठ , एक जाति। आचार्य = शिक्षक। अधोगति = पतन। उच्चता = ऊँचापन।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक सरयू में संकलित 'भारत की श्रेष्ठता' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। गुप्त जी भारत के अतीत कालीन गौरव के गायक हैं। भारत संसार का प्राचीनतम तथा श्रेष्ठ देश है। यहाँ के निवासी विद्वान तथा कला-कौशल में दक्ष थे।

व्याख्या– कवि कहता है कि भारत विश्व का पवित्र स्थल है। इस देश के निवासी आर्य कहलाते हैं। आर्य श्रेष्ठ मनुष्य को कहते हैं। वे महान् विद्वान थे तथा अनेक विधाओं और कलाओं के शिक्षक थे। सर्वप्रथम उन्होंने ही संसार को सुशिक्षित बनाया था तथा कला-कौशल की शिक्षा दी थी। हम उन्हीं आर्यों की संतान हैं। यद्यपि आज हमारा पतन हो गया, किन्तु अब भी उनकी श्रेष्ठता की अनेक रचनाएँ संसार में शेष हैं।

विशेष –

1. कवि ने भारत तथा उसके निवासियों की श्रेष्ठता का वर्णन किया है।
2. भाषा सरल है तथा भावों की व्यंजना में समर्थ है।
3. अनुप्रास अलंकार व ओज गुण है।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg